‘अनुसन्धान : प्राविधि एवं प्रक्रिया’ पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

एसएनडीटी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई, के हिन्दी विभाग द्वारा दिनांक २९-३० अक्टूबर २०१५ को “अनुसंधान: प्रवृधि एवं प्रक्रिया” विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमे हिन्दी के साथ विश्व विद्यालय के गुजराती, मराठी एवं संस्कृत विभागों तथा मालाड व माटुंगा के सम्बद्ध महाविद्यालयों के हिन्दी विभागों की छात्राओ और शिक्षक-शिक्षिकाओं के अलावा शहर के तमाम साहित्य-प्रेमियों ने भागीदारी की.

डॉ वेदप्रकाश दुबे के संचालन में उद्घाटन सत्र की शुरुआत कुलगीत व छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सरस्वती- वंदना और अतिथि विद्वानों द्वारा दीप-प्रज्जवलन से हुई. विभागाध्यक्ष प्रो. सत्यदेव त्रिपाठी के विषय-प्रवर्त्तन के बाद प्रो. हरिमोहन शर्मा (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्र. कुलगुरु प्रो. वंदना चक्रवर्ती ने उच्च शिक्षा-जगत में शोध की महत्ता और साहित्य में शोध के संभावित विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये. प्रो. सुनीता साखरे के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उदघाटन-सत्र सम्पन्न हुआ.

प्रथम सत्र का विषय था - “अनुसंधान : अवधारणा, स्वरूप एवं आयाम”, जिसके अध्यक्ष पद से प्रो. कृष्ण मुरारि मिश्र (अलीगढ) ने शोध और आलोचना में मूल अंतर यह बताया कि शोध के तथ्यों पर बहस नहीं की जा सकती, जबकि आलोचना पर बहस हो सकती है. इस सत्र में डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी (दिल्ली) ने “तुलनात्मक प्रविधि की प्रासंगिकता” पर प्रकाश डाला और डॉ. श्याम सुन्दर पाण्डेय (मुम्बई) ने “अनुसंधान: अवधारणा एवं स्वरूप” विषय पर अपने विचार व्यक्त किये. संचालन किया कुसुम राव ने।

‘शोध की तैयारी’ पर आधारित द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी ने की, जिसमें डॉ. लक्ष्मण पाटिल (सांगली) ने ‘विषय-चयन’ एवं मुम्बई के डॉ. सतीश पाण्डेय एव डॉ महेन्द्र गुहा ने क्रमश: ‘रूपरेखा-निर्धारण’ व ‘सामग्री-संकलन’ पर अपने विचार रखे, जबकि डॉ. भारती गोरे (औरंगाबाद) ने अंतरनुशासनिक शोध पर प्रकाश डाला। संचालन किया कुसुम विश्वकर्मा ने।

दूसरे दिन संगोष्ठी के तृतीय सत्र में “शोध के प्रकार” में प्रो उमाशंकर उपाध्याय (म.गां अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि, वर्धा), ने ‘भाषा वैज्ञानिक शोध’ पर अपने विचार रखते हुए वर्तनी को भाषा का चेहरा कहा. उन्होंने भाषा के अंतर्गत शोध की असीम सम्भावनाओं को सामने रखा। इस सत्र में मुम्बई की डॉ. उषा मिश्र एवं डॉ. वेदप्रकाश दुबे ने क्रमश: “ऐतिहासिक शोध” व “शोध के आयाम” तथा डॉ. राकेश सिंह (हैदराबाद) ने “पाठानुसंधान” पर अपने विचार प्रस्तुत किये. अध्यक्षता की प्रो हरिमोहन शर्मा ने और संचालन किया श्रीमती सन्देशा भावसार ने।

डॉ लक्ष्मण पाटिल के सधे संचालन में चतुर्थ सत्र “शोध प्रबंध का प्रस्तुतीकरण” पर रहा। केरल से आये डॉ. बाबू जोसेफ ने “शोध प्रबंध-लेखन” एवं डॉ संतोष कौल ने ‘शोध में इंटर्नेट की उपयोगिता’ पर अपने विचार रखे. अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में रोचक उदाहरणों से प्रो उमाशंकर उपाध्याय ने प्रबन्ध-प्रस्तुति को रेखांकित किया।

लगभग आधे दर्ज़न श्रोताओं की चर्चात्मक टिप्पणियों के बाद प्रो. सत्यदेव त्रिपाठी के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ.